स्वराज से लोकस्वराज तक

शशिधर सिंह कपूर

यूँ तो स्वराज की सार्वजनिक चर्चा स्वामी दयानन्द सरस्वती ने १९वी शताब्दी के अंत में शुरू की थी पर बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में बाल गंगाधर तिलक की उद्घोषणा " स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है " से इसे बल मिला .अंतत: महात्मा गाँधी ने इसे मुख्यधारा में स्थापित किया . १९२९ में कांग्रेस के " पूर्ण स्वराज" के संकल्प के बाद यह भारतीय मानस में स्थापित हो गया.स्वंतत्र भारत में दो मनीषियों ने स्वराज को विभिन्न स्वरुप में प्रतिपादित करने का प्रयास किया.विनोबा भावे ने भूदान आंदोलन द्वारा तथा जयप्रकाश नारायण ने सम्पूर्ण क्रान्ति के माध्यम से .१९९२ के ७३ वे संविधान संशोधन के बाद स्वराज भारतीय सार्वजनिक जीवन में अपरिवर्तनीय रूप में बस गया. २०११ में स्वराज से प्रेरित हो कर अरविन्द केजरीवाल ने भ्रष्टाचार विरोधी मुहीम चलाई .एक अन्य सीमित प्रयास योगेंद्र यादव स्वराज अभियान में कर रहे हैं.

दयानन्द सरस्वती स्वराज को " होम रूल " या स्वशासन के रूप में देखते थे जबकि तिलक का आशय मूलत: एक अच्छी सरकार से था न कि संपूर्ण स्वतंत्रता .वक्त के साथ इसके मायने भी बदलते गए.गांधीजी जी ने स्वराज को नागरिको के राज के रूप में परिभाषित किया था. कालांतर में विनोभा भावे ने समग्र ग्राम स्वराज को अपनाया , जयप्रकाश नारायण स्वराज को पार्टी रहित प्रजातंत्र के स्वरुप में चाहते थे और पंचायती राज के अंतर्गत इसे स्वशासन की तरह देखा गया. अरविन्द केजरीवाल शासन व्यवस्था को बदलकर उसे जनकेन्द्रित बनाने का प्रयास कर रहे हैं और योगेंद्र यादव का आग्रह आम नागरिकों को नीतियों के केंद्र में लाने पर है.उपरोक्त सभी परिभाषाओं की खूबियां व् कमियां है.संभवत: आज के परिप्रेक्ष्य में एक वृहद् परिभाषा कि ज़रुरत है जो इन सभी विशेषताओं को

एक वर्णक्रम में समेकित करे तथा कमियों को घटाए. जैसे कि " लोकस्वराज " यानि " समूहों का सामूहिक राज तथा व्यक्तियों का स्वयं पर शासन (अनुशासन) "

बापू के स्वराज का चित्र सोवियत व् भारत की प्राचीन पंचायतों का मिला जुला स्वरुप था.आज़ादी के तुरंत बाद राष्ट्रीय स्तर पर तो काफी हद तक केंद्रीयकृत योजना अपनायी गयी किन्तु विकेन्द्रीकृत पंचायतों का गठन करने में लगभग आधी शताब्दी का वक्त लगा. उसमे भी भारतीय परंपरागत ढांचे को नज़रअंदाज़ किया गया. आज आवश्यकता है कि हम ग्रामीण शासन व्यवस्था को समग्र रूप में देखें और भारतीय परंपरागत पंचायतों को आधुनिक कम्यून या ग्राम सभा से जोड़कर रचें.

स्वराज की व्याख्या करते हुए बापू ने कहा था कि स्वराज केवल राजनैतिक स्वतंत्रता नहीं अपितु आर्थिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक स्वतंत्रता भी है.पंचायती राज में स्वराज राजनैतिक-आर्थिक अधिकारों तक ही सीमित है. गाँधी जी ने आध्यात्मिक स्वशासन की कल्पना की थी.यदि उसे चैतन्य शासन से जोड़ दिया जाये तो एक समग्र-समेकित लोकस्वराज आकार ले सकता है.बापू के स्वराज के मूल में नैतिकता है तो लोकराज का ढांचा आचार है.

गांधीजी की परिकल्पना में ग्राम स्वराज की इकाइयों को जोड़कर जिला स्तर एवं राज्य व् राष्ट्रीय स्तर के गणराज्यों का गठन था.वर्तमान त्रि-स्तरीय पंचायतों में इसकी एक झलक मिलती है.भविष्य में त्रिस्तरीय स्वराज संथाओं को त्रिस्तरीय लोकराज संस्थानों (शासन) से मिलाकर एक लोकस्वराज का प्रारूप तैयार हो सकता है

संविधान संशोधन के बाद जब स्वराज की पहली कड़ी - पंचायत - का गठन हुआ तो शुरुआती दौर में अनेकों मुश्किलें आयीं जैसे कि सुपात्र प्रत्याशियों कि कमी.अनेकों विकृतियां भी उभर कर आयीं- उदाहरण के तौर पर पंचायत पति की कुप्रथा. दो दशकों के बाद अब स्वराज बाल्यकाल से निकल कर युवावस्था में पदार्पण के लिए तैयार है.समय आ गया है कि इन संस्थाओं को अब अन्य अधिकार भी दिए जाएं.अंततोगत्वा इन इकाइयों को स्वायत्त बनाना होगा.

गांधीजी की स्वराज की कल्पना में केवल सामूहिक पहलू ही नहीं वरन व्यक्तिगत आयाम भी थे.उनके अनुसार जब तक नागरिक स्वशासित-अनुशासित नहीं होंगे तब तक स्वराज सही मायनों में क्रियान्वित नहीं हो सकेगा.आज के पंचायती राज का केंद्र मुख्यत: सामूहिक है. फिलहाल ज़रुरत है कि पदाधिकारियों व् नागरिकों की क्षमता निर्माण पर ध्यान दिया जाये. आने वाले समय में नागरिकों को लोक शिक्षा द्वारा सशक्त बनाया जाये. लोकस्वराज में नागरिक अनुशासित व् रहवासी मर्यादित होंगे.प्रत्येक अधिकार के साथ ज़िम्मेदारी जुडी होगी.

बापू के स्वराज में व्यक्तिगत स्वतंत्रता सर्वस्व है ; लोकस्वराज में इसे सामूहिक मर्यादाओं से जोड़कर देखना है.स्वराज में नागरिक सर्वोपरि हैं ; लोक स्वराज में सार्वजनिक मुद्दों में राज्य संप्रभु है.विकास के साथ सार्वजनिक समस्याएं जटिल होती जाती हैं. फलस्वरूप राज्य अधिकाधिक सशक्त बनता जाता है. गांधीजी के अनुसार शासन कि शक्ति बढ़ने के साथ ही नागरिकों को भी सशक्त बनाना ज़रूरी है. लोकस्वराज शासन की शक्तियां बढ़ने के अनुपात में नागरिकों के अधिकार व् पात्रता बढ़ाने की बात करता है

बापू के अनुसार व्यक्तिगत विकारों से मुक्ति पाना ही वास्तविक स्वराज है ; लोकस्वराज में सामूहिक बेड़ियाँ तोड़ना भी सम्मिलित है.गांधीजी के स्वराज के मूल में करुणा एवं सत्याग्रह है.लोकस्वराज में संवेदनशीलता व् सहिष्णुता समाहित है.गांधीजी के स्वराज की परिकल्पना में स्वदेशी वस्तुओं के इस्तेमाल का आग्रह है ;लोकस्वराज में सही अनुपात में सर्वदेशी वस्तुओं का समावेश है.

गांधीजी ने पश्चिमी न्याय व्यवस्था को अमीरों द्वारा गरीबों को काबू में रखने की जुगत बताया. आज के भारत में यह काफी हद तक सही है- जहाँ फैसला तो आ जाता है पर अक्सर न्याय नहीं मिलता.लोकस्वराज वर्तमान न्याय प्रणाली को मध्यस्थता आधारित पारम्परिक भारतीय न्याय व्यवस्था से जोड़कर देखना चाहता है.

बापू की स्वराज परिकल्पना समग्र थी और वह विविधता में एकता पर आधारित थी. त्रि- स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था बहुलता पर केंद्रित है. इसके चलते अक्सर समन्वय की समस्या खड़ी होती है. यदि लोक स्वराज की दिशा में बढ़ा जाये तो बहुलता एकीकृत हो सकती है.इस व्यवस्था में तीन आयाम होंगे - ग्रामीण स्वराज ,शहरी सुराज और राष्ट्रीय लोकराज.यह तीन क्रमश: कार्यक्रम निर्माण ,परियोजना रूपरेखा तथा नीति निर्धारण करेंगे. स्वराज की इकाइयां आत्मनिर्भर होंगी ,सुराज स्वायत्त होगा तथा लोकराज स्वतंत्र होगा.गांधीजी के स्वराज का ध्येय व्यवस्था परिवर्तन था , सुराज का लक्ष्य सत्ता परिवर्तन जबकि लोकस्वराज का गंतव्य सत्ता परिवर्तन तथा व्यवस्था परिवर्तन दोनों है.

महात्मा ने पश्चिमी सभ्यता को लगभग नकार दिया था , सुराज का ज़ोर भारतीय संस्कृति पर है - लोकस्वराज बाहरी सभ्यता व् मूल संस्कृति का सम्मिश्रण है.

गांधीजी के अनुसार इंग्लैंड की केंद्रीयकृत संसदीय प्रणाली केवल सामूहिक दबाव में काम करती है ,स्वत: नहीं. गांधीवादी स्वराज के अनुसार विकेन्द्रीकरण ही समावेशी विकास की कुंजी है.वर्तमान पंचायती राज दो सोपानों से हो कर गुजरा है- एक में कुछ हद तक राजनैतिक विकेन्द्रीकरण हुआ और दूसरे पर थोड़ा आर्थिक विकेन्द्रीकरण. लोक स्वराज की अवधारणा के तहत सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं का विकेन्द्रीकरण भी लाज़मी है.लोकस्वराज में लोक सभा एक महापंचायत तथा ग्राम पंचायत एक लघु संसद होगी.राज्य सभा एक महा ग्रामसभा व् ग्रामसभा एक लघु राज्यसभा होगी.

बापू के स्वराज में विकास की अवधारणा नीचे से ऊपर की ओर जाती है वहीँ लोकस्वराज में विकास नीचे से ऊपर व् कल्याण ऊपर से नीचे आता है. हमें गांधीजी के कहे अनुसार कतार में अंतिम व्यक्ति/ समूह का ध्यान रखने के साथ-साथ पंक्ति में प्रथम व्यक्ति / समूह पर भी सही अनुपात में ध्यान देना होगा.

भारत में एकरूपता वाला एकछत्र शासन तो अशोक और अकबर भी नहीं चला पाए.विविधता में एकता वाली नैसर्गिक सोच इस राष्ट्र की है.मुग़ल काल तक तो पंचायतें लगभग स्वायत्त रहीं- अंग्रेजी शासन में यह अप्रासंगिक हो गयीं.बहुजन सुखाय ,बहुजन हिताय की सोच को विस्तार दे कर उसे सर्वजन सुखाय ,सर्वजन हिताय बनाना होगा.यदि भारत को अंतर्राष्ट्रीय नेतृत्व पाना है और विश्व गुरु बनाना है तो लोकस्वराज उसका एक अच्छा माध्यम हो सकता है.ऐसी व्यवस्था में विकास के साथ ख़ुशी पर भी समुचित ध्यान दिया जायेगा.बदलाव युद्ध अथवा गृह युद्ध से नहीं अपितु विचारों की स्पर्धा व् भावनाओं की प्रतिस्पर्धा द्वारा हासिल किया जायेगा.

गांधीजी स्वराज को मात्र शासन पद्धति नहीं वरन जीवन दर्शन मानते थे.लोकस्वराज के माध्यम से हम शासन का एक नया दर्शन गढ़ सकते है.स्वराज की शुरुआत तो हो चुकी है- यदि गाँधी जी की १५०वी सालगिरह पर हम सुराज का संकल्प लें और भविष्य में आज़ादी के १००वे साल तक लोकस्वराज को प्रस्थापित कर सकें तो यह उनको एक सच्ची श्रद्धांजलि होगी.यह एक प्राप्य लक्ष्य है जिसके प्रमाण पूरे भारत में हैं . जैसे महाराष्ट्र में रालेगांव सिद्दी और हिवरे बाजार तथा चेन्नई में कुटम्बकम . मध्य प्रदेश के नरसिंहपुर का बघुवार ग्राम और मंडला का बरखेड़ा क्रमश: समेकित स्वराज व् समग्र स्वराज का जीता जागता उदाहरण हैं.

राष्ट्रपिता के सपनो का भारत यदि हम चाहते हैं और १०० वर्षों का महामानव तैयार करना है तो उनके विचारों को वर्तमान परिवेश में ढालना होगा.अगर गांधीजी हमारे बीच होते तो संभवत: हम उसे जस का तस अपनाने का प्रयास कर सकते थे.किन्तु चूंकि बापू नहीं हैं सो कुलदीप नय्यर के कथन अनुसार हम गाँधी जैसे महामानव के आने का अंतहीन इंतज़ार नहीं कर सकते अत: हमें अनेकों छोटे- छोटे गाँधी चाहिए जो उनके विचारों को विस्तार दे सकें.लोक स्वराज के माध्यम से हम विश्व के समक्ष टिकाऊ व् समावेशी शासन की एक नज़ीर पेश कर सकते हैं.भागीदारी वाले शासन का यह परम्परावादी - सह- उत्तर आधुनिक दर्शन होगा.

***

(1468 words)

सदर्भ : १. "हिन्द स्वराज" - गाँधी

२. स्वराज -अरविन्द केजरीवाल.

३.स्वराज दर्शन- स्वराज अभियान